शिक्षा व समाज में अंतर्संबंध, चुनौतियाँ व सम्भावनाएं

डॉ0 कल्पना यादव,

सह–आचार्य,

खुन खुन जी गर्ल्स पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ (उ0प्र0)

प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान भारतीय शिक्षा का प्रयोजन क्या है ? मानव जीवन व समाज के मूल उद्देश्यों से इसका क्या अन्तर सम्बन्ध है ? एक स्थिर समाज में शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी को सांस्कृतिक व बौद्धिक विरासत हस्तान्तरित करना है। लेकिन एक बदलते समाज में इन सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विरासत को जिसे हम हस्तान्तरित कर रहे हैं क्या उसमें कोई परिवर्तन की आवश्यकता हैं? क्या बार–बार शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करना उचित हैं? कभी शिक्षा प्रणाली समाज को प्रभावित करती हैं तो कभी समाज शिक्षा प्रणाली को प्रभावित करता है।

वर्तमान में प्राईवेट स्कूल पैसा कमाने के उद्योग हो गये हैं एवं सरकारी स्कूल सिर्फ एक रस्म निभा रहे हैं और शिक्षक नौकरी करके आजीविका चला रहे हैं या ट्यूशन की दुकान बनते जा रहे हैं। विद्यार्थियों के लिए शिक्षा का अर्थ भविष्य के लिए रोजगार तलाशने का जरिया है या समय व्यतीत करना है। जबकि एक प्रगतिशील समाज में शिक्षा उद्देश्यात्मक होनी चाहिए –

समाज में शिक्षा का उद्देश्य

1. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सामाजीकरण की प्रक्रिया पूरा करना है – शिक्षा जिम्मेदार नागरिक, चरित्रवान नेता, ईमानदार अधिकारी व कर्मचारी बनाती है। शिक्षा देशभक्त बनाती है एवं वतन पर मर मिटने का जज्बा पैछा करती है।
2. शिक्षा विरासत को हस्तान्तरित करने वाली हो – शिक्षा ऐसी हो जो कौशल, कला, साहित्य, दर्शन, धर्म, संगीत और विश्वासों को बढ़ाए इसके लिए गम्भीर प्रयास करना चाहिए।
3. शिक्षा से समाज में सुधार हो व मनुष्य शिष्ट बने – शिक्षा मनुष्य को शिष्ट बनाने वाली हो, व्यवहारिक, विश्वासप्रद व वफादारी के गुणों को जागृत करें। घृणा, पूर्वाग्रहों को अवशोषित करें।
4. शिक्षा सिर्फ आजीविका कमाने का साधन न हो – शिक्षा रोजगारोन्मुखी हो किन्तु केवल आर्थिक मानव या यान्त्रिक मानव उत्पन्न न करें। शिक्षा आजीविका कमाने का साधन हैं यह सोच बदलना होगी। शिक्षा जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।
5. सामाजिक व्यक्तित्व का गठन करना – शिक्षा का मुख्य लक्ष्य सामाजीकरण की प्रक्रिया पूरा करना है। वर्तमान शिक्षा से बच्चों का सामाजीकरण करने के बजाए व्यवसायीकरण किया जा रहा है।
6. अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कौशल की शिक्षा आवश्यक है।
7. शिक्षा सहभागी लोकतंत्र को बढ़ावा देने वाली हो – किसी बड़े और जटिल समाज के सहभागी लोकतंत्र साक्षरता पर निर्भर करता है लोकतंत्र की सफलता ही शिक्षित जनता पर निर्भर है।। साक्षरता लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और प्रभावी मतदान में लोगों की पूर्ण भागीदारी की

अनुमति देती है। साक्षरता शिक्षा का एक उत्पाद है। शिक्षा प्रणाली का आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक महत्व है। शिक्षा मूल्यों को प्रदान करती है।

8. शिक्षा एकीकृत शक्ति के रुप में कार्य करे – शिक्षा मूल्य सम्प्रेषण के द्वारा समाज में एकीकृत शक्ति के रुप में कार्य करें। समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करती है। बच्चों को सामाजिक कौशल, मूल्यों, आवश्यक ज्ञान को प्रदान करने वाली हो।

शिक्षा व समाज के अंतर्संबंध के मार्ग की चुनौतियाँ – बट्रेंड रसल के अनुसार ''शिक्षा का कार्य केवल तथ्य संग्रह करना नही है बलिक यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मानव समाज अपना अस्तित्व तलाशता है।'' भारत में शिक्षा व समाज के अन्तर्संबंध के मार्ग की मुख्य चुनौतिया हैं –

- शिक्षा के व्यवसायीकरण को रोकना।
- शिक्षक के सम्मान को पुनर्जीवित करना।
- शैक्षणिक सुधार हेतु आर्थिक संसाधन जुटाना।
- शिक्षण संस्थाओं को नौकरशाहों व राजनेताओं के नियन्त्रण व हस्तक्षेप से मुक्ति दिलाना।
- बच्चों पर से बस्ते के बोझा को कम करना।
- मूल्य आधारित शिक्षा को पुनर्जीवित करना।
- सामाजिक लक्ष्यों और उद्देश्यों को स्थापित करना।
- संस्थागत सामाजिक बदलाव लाना–शिक्षण सामग्री, शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण की विधि में बदलाव लाना।
- शिक्षक की शिक्षा और विद्यार्थी शिक्षकों के सम्बन्धों में सम्मान लाना।
- शोध व ज्ञान आधारित शिक्षा का विस्तार करना।
- समाज से वर्गभेद, जातिभेद को समाप्त करना।
- विद्यार्थियों की शिक्षण संस्थाओं में उपस्थिति।
- भारत में शिक्षा के आधुनिकीकरण की चुनौती।
- शिक्षण की भाषा समस्या।
- भारत की भिन्नता के साथ एकता स्थापित करना।
- देश प्रेम की भावना को जागृत करना।

भारत में शिक्षा स्तर को ऊँचा उठाने एवं समाज से अंतर्संबंध प्रगाढ़ के सुझाव–भारत में शिक्षा को समाजोपयोगी बनाना है तो शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए आवश्यक है–

शिक्षा तंत्र को आवश्यक स्वायतता देना

प्राचीन समय में गुरुकुल राजनैतिक प्रशासनिक हस्तक्षेप से मुक्त होते थे। आजादी के 20 वर्षों बाद भी विद्यालयों और विश्वविद्यालयों को काफी स्वायतता थी किन्तु वर्तमान में शिक्षण संस्थाओं एवं शिक्षक पूरी तरह राजनैतिक व प्रशासनिक सत्ता के अधीन हैं जो शिक्षा के लिए घातक हैं।

गुरु शिष्य परम्परा को पुनर्जीवित करना

शिक्षा की सार्थकता गुरु शिष्य सम्बन्धों पर निर्भर हैं। लेकिन वर्तमान में यह व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है। राजनैतिक व प्रशासनिक हस्तक्षेप ने इस गौरवशाली सम्बन्धों को समाप्त कर दिया है। जिसने शिक्षा के कार्य को बदलकर मूल्यों को समाप्त कर दिया है। आज शिक्षक मात्र ट्यूमर व

व्यवसायी हो गया है। सिनेमा व विज्ञापनों में शिक्षक मजाक की विषय वस्तु बन गये हैं। अतः शिक्षकों को सम्मान स्थापित करना आवश्यक है।

अच्छी शिक्षा अच्छा वेतनमान हो

आज शिक्षा देने वाले शिक्षकों को अपना वेतन बढ़ाने के लिए बार–बार आन्दोलन करना पड़ रहा है। वेतनमान में भी भेदभाव किया जा रहा है। इससे शिक्षा का स्तर नीचे गिरता जा रहा है। आज लोग शिक्षक बनने में शर्म महसूस करते हैं। आज जनभागीदारी नियुक्ति, अतिथि शिक्षक, दैनिक वेतनभोगी शिक्षक, प्राईवेअ शिक्षक के वर्ग भेद कर दिये हैं। सर्वशिक्षा अभियान के तहत स्कूलों के भवन तो बन गये हैं लेकिन पूर्णकालिक शिक्षकों का अभाव है। अतः इस व्यवस्था को समाप्त कर अच्छी शिक्षा के लिए अच्छा वेतन देना आवश्यक है।

समाज में शिक्षण संस्थाओं के लिए सहयोग व दान लेना

भारत में शिक्षा के निम्न स्तर का कारण धन की कमी है, इसलिए शिक्षा के उन्नयन हेतु आर्थिक संसाधन जुटाने हेतु उद्यमियों, उद्योगपतियों, व्यापारियों व व्यापक रुप से समाज को इससे जोड़ा जाना चाहिए। जनभागीदारी के माध्यम के बिना निजीकरण किये शासकीय शिक्षण संस्थाओं को नवजीवन मिल सकता है।

शिक्षकों को वेतन देना फिजुलखर्ची है, इस गलत मानसिकता से उभरने की जरुरत है। सर्वप्रथम पूर्णकालिक शिक्षकों की नियुक्ति आवश्यक है।

शिक्षा को प्रशासनिक अधिकारियों व राजनेताओं के दबाव से मुक्त करना आवश्यक है

पहले जाने माने शिक्षक ही स्कूली शिक्षा, मण्डल, निकायों के संचालक होते थे पर अब अपने आपको सर्वज्ञ समझने वाले प्रशासकीय अधिकारियों ने इस पर कब्जा जमा लिया है। इसके परिणाम आए दिन शिक्षा जगत में नये–नये अल्प जीवी प्रयोग होने लगे हैं। अतः इस दोषपूर्ण व्यवस्था को बदल कर एक पारदर्शी नीति अपनाना चाहिए तथा शिक्षाविदों, अनुभवी व्यक्तियों को संचालक व अन्य पदों पर नियुक्ति देना चाहिए।

शिक्षा का तकनीकिकरण होगा

वैश्वीकरण के इस दौर में शिक्षा को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु इसका तकनीकीकरण करना आवश्यक है। अंतरिक्ष, अन्वेषण व संचार, मास मीडिया के साथ जोड़ना होगा।

सामाजिक लक्ष्यों, उद्देश्यों और मूल्यों में बदलाव लाया जावें।

विद्यालयों में छात्र अनुपस्थिति रोकने के लिए फसल की कटाई, बुवाई के समय छुट्टियां दी जाएं ताकि अनुपस्थिति रोकी जा सकें।

सम्पूर्ण भारत में पाठ्यक्रम में एकरुपता लाई जाए।

शिक्षकों को निरन्तर प्रशिक्षित किया जाए।

शिक्षण का एक आम संचार (भाषा) माध्यम करना।

गाँवों में पर्याप्त स्कूल व भवन बनवाएं जाएं।

देश की विविधता पूर्ण समाज के साथ समन्वय किया जाएं।

शिक्षा में जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद को समाप्त कर राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने वाली शिक्षा दी जाएं।

शिक्षा का व्यवसायीकरण रोक जाए इस हेतु कानून बनाया जाएं।

शोध आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना ताकि सामाजिक बदलाव व विकास को गति मिल सकें।

शिक्षा का आधुनिकीकरण किया जाए। इस हेतु संस्थागत बदलाव किया जाए, शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण विवि व संसाधनों में बदलाव किया जाए।

निष्कर्ष

भारतीय शिक्षा प्रणाली इतनी सारी खमियों से ग्रस्त है लेकिन इसके बावजूद भारत में शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के प्रभावी उपकरण में से एक है। शिक्षा ने समाज को विकास और परिवर्तन करने के लिए लामबन्दी करके प्रेरित किया है। इस प्रकार आधुनिक जटिल राष्ट्रीय समाज में शिक्षा न तो सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए एक नियन्त्रित शक्ति के रुप में देखा जा सकता है और न ही सामाजिक परिवर्तन के ऐजेन्ट के रुप में देखा जा सकता है। इसे एक सहकारी बल के रुप में देखा जा सकता है और इन शिक्षण योजनाओं में समाज की भागीदारी आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में नेतृत्व की आवश्यकता है जो समाज की मूलभूत खामियों को पहचान कर नई सोच व प्रणालियों के साथ देश में ज्ञान का प्रकाश फैला सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा शरद –''भारत में शिक्षा और समाज''– countercurrents.;org लेख, जननीति 27 जुलाई 2009, पृ0 02।
2. गुप्ता जे0 पी0 – शिक्षा स्वायत्तता, सम्मान और समाज – जनसत्ता, 2 दिसम्बर 2010, पृ0 01।
3. कुमार अम्बुज–पूंजीवाद समाज में परिवार का स्वरुप का स्वरुप – हिन्दी समय वर्ष, 2013, पृ0 01।